छन्द

चौपाई

जय हनुमान ग्यान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।

हरिगीतिका

कहते हुए यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए।।

अन्याय सहकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बंधु को भी, दण्ड देना धर्म है।।

रोला

नित नव लीला ललित ठानि गोलोक अजिर में।
रमत राधिका संग रास रस रंग रुचिर में।।

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकर सुधारि।
बरनऊ रघुवर विमल जस, जो दायक फल चारि।
मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागर सोई।
जा तन की झाईं परै, स्याम हरित दुति होई।।

परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

- श्री गुरु चरण सरोज रज,
  निज मन मुकुर सुधार।
  बरनउ रघुवर विमल जस,
  जो धायक फल चार। –दोहा
- छंद कितने प्रकार के होते हैं। तीन प्रकार

परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

- रत्नाकर कृत 'गंगावतरण' किस छंद में –रोला
- अवधी का निजी छंद है –बरवै
- रोला में मात्रा है –24
- रोला + उल्लाला –छप्पय
- प्रथम व तृतीय चरण में 13-13 मात्राएँ दूसरे व चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ हो तो –दोहा
- रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। –दोहा
- दोहे का उल्टा –सोरठा
- निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नित कौ मूल।। –दोहा
- सर्वप्रथम 'छंद' की चर्चा किस वेद में मिलती है –ऋग्वेद

परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

- मात्रिक अर्द्धसम जाति का छंद है –दोहा
- चौपाई के प्रत्येक चरण में मात्राएँ होती हैं –16

EduBull.com